

दैनिक जागरण

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार



वर्ष 26 अंक 66

पृष्ठ 18+4=22

नई दिल्ली, सोमवार

21 सितंबर 2015

राजधानी

मूल्य ₹ 5.00

सौंदर्यबोध के बिना अधूरा है जीवन

सौंदर्य बोध के बिना जीवन अधूरा है। हम जिस परिवेश में रहते हैं, उसका एक एहसास होता है। जो भी हम देखते हैं, उसको महसूस करते हैं। उस माहौल को फिर अपने हिसाब से समझने की कोशिश करते हैं। आगे की प्रक्रिया में उसके प्रति आकर्षित भी होते हैं। यह पूरी प्रक्रिया सौंदर्यबोध के तहत आती है। इसमें वह वस्तुएं जिनसे बालक प्रथम बार परिचित होता है, या उन्हें वह पहली बार देखता है, या पहली बार उसके संपर्क में आता है, वह नकारात्मक या सकारात्मक एहसास दोनों हो ही सकती है। यह सौंदर्यबोध कहलाता है।

अगर सौंदर्यबोध सकारात्मक हो तो सोच सकारात्मक होती है और हम उन्नति की ओर बढ़ते हैं, नहीं तो जीवन में नकारात्मकता आती है। राम और रावण हर समय में हुए हैं। यह मन के भाव हैं। इसलिए जरूरी है कि बच्चों को एक ऐसा माहौल दिया जाए जिसमें सौंदर्यबोध की यह प्रक्रिया उनमें सकारात्मक रूप से पनपे और बढ़े। वह चीजों और परिवेश से घबराने नहीं, बल्कि उन्हें सही तरीके से समझें। इसके लिए घर के स्तर पर ही प्रयास शुरू हो जाने चाहिए। बच्चों को किसी भी चीज या भाव की जानकारी देते समय परिजनों को कोशिश करनी चाहिए कि वह बाल मन को समझें। साथ ही उसकी कल्पनाओं और सोच



सकारात्मक सोच विकसित करने के लिए जरूरी है कि

सकारात्मक लोगों की संगत में रहें तभी हम उन्नति और प्रगति की ओर बढ़ेंगे। कुल मिलाकर सौंदर्यबोध दो रूपों

में होता है जो मनुष्य को दानव और देव की श्रेणी में बांटते हैं। अगर सौंदर्यबोध सकारात्मक है तो फिर सूरज भी अच्छा लगता है। यह सौंदर्यबोध ही है कि एक बच्चे को अपनी बुजुर्ग मां में भारत माता की तस्वीर दिखाई देती है।

-रूमा पाठक,

एमएम पब्लिक स्कूल, पीतमपुर

की उड़ान में रुकावट न खड़ी करें। उसके सवाल्यों पर झुंझलाए नहीं, बल्कि उसके प्रश्नों का सरल भाषा में जवाब दें। उन्हें बताएं सूरज क्यों निकलता है। फूल क्यों खिलते हैं। दिन और रात क्यों होता है।

सौंदर्यबोध के अंतर्गत प्रायः बालक कल्पनाओं का सहाय लेता है और अब तक मिले विभिन्न उदाहरणों के सहारे उसे जोड़ने की कोशिश करता है। जैसे यदि 10 वर्ष का बालक पहली बार किसी व्यक्ति विशेष से प्रभावित होता है तो वह अपने आसपास के वातावरण

में विभिन्न प्रकार के उदाहरणों द्वारा उस व्यक्तित्व को समझने की कोशिश करता है। फिर उस आधार पर आंकता है कि उसमें क्या विशेषता है। अगर यह सौंदर्यबोध ही नहीं होता तो यह जीवन संवेदना विहीन हो जाए। सौंदर्यबोध विकसित करने के लिए जरूरी है कि जितना हो सके, समाज में रहें। दूसरों से तर्क और संबंधित विषयों पर चिंतन करें। सामूहिक चर्चा के माध्यम से भी एक समझ विकसित होती है। इसके साहित्य का भी सहाय लिया जा सकता है। अच्छे किताबें पढ़ना, कविताएं, कहानियां, उपन्यास इसके कई आयाम हैं। यहां तक की लिखने की कला, नृत्य संगीत, पेंटिंग भी सौंदर्यबोध को बढ़ाती है। स्कूल के स्तर पर भी बालक को एक-एक माहौल दिया जाना चाहिए। जिससे की उसकी सोच को एक नया आयाम मिले। कक्षाओं में वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण, लेखन, पाठ जैसे सामूहिक आयोजन नियमित तौर पर होने चाहिए। वैसे भी सोच मात्र किताबी ज्ञान से विकसित नहीं होती है। आस-पास के माहौल को भी समझना जरूरी है। हम जब बच्चों को सौंदर्यबोध की प्रक्रिया से गुजारते हैं तो उन्हें संघर्ष के लिए प्रेरित करने की जगह सही गलत की पहचान करने और परखने पर जोर देते हैं, ताकि पहले छात्र अपने स्तर पर अपने को पहचान सके। इसके बाद वह कोई फैसला ले।